NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत की बहुध्रुवीय विश्व में विकसित होती वैश्विक व्यापार रणनीति

www.nextias.com

भारत की बहुध्रुवीय विश्व में विकसित होती वैश्विक व्यापार रणनीति

संदर्भ

- भारत की हालिया वैश्विक व्यापार रणनीति सतर्क क्षेत्रवाद से सक्रिय वैश्विक एकीकरण की ओर एक निर्णायक बदलाव को दर्शाती है। इसका उद्देश्य स्वयं को एक अग्रणी वैश्विक व्यापार भागीदार के रूप में स्थापित करना है, साथ ही रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना है।

भारत की विकसित होती वैश्विक व्यापार रणनीति

- वैश्विक व्यवस्था एकध्रुवीय या द्विध्रुवीय प्रणाली से बहुध्रुवीय विश्व की ओर बढ़ रही है, जिसमें चीन का उदय, रूस का पुनरुत्थान, मध्यम शक्तियों की रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का पुनर्गठन शामिल है।
- भारत की विकसित होती व्यापार रणनीति आर्थिक एकीकरण, रणनीतिक स्वायत्तता और भू-राजनीतिक लचीलापन के बीच संतुलन बनाने का एक सुविचारित प्रयास है।
- भारत स्वयं को केवल एक व्यापारिक राष्ट्र के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक वाणिज्य में प्रणाली-निर्माण शक्ति के रूप में पुनः स्थापित कर रहा है।

बहुध्रुवीय विश्व का व्यापारिक वातावरण

- बहुध्रुवीय व्यापारिक वातावरण की विशेषताएँ:
  - खंडित आपूर्ति श्रृंखलाएँ।
  - भू-आर्थिक प्रतिस्पर्धा (अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता)।
  - व्यापारिक गुटों और रणनीतिक गठबंधनों का उदय।
  - व्यापार और प्रौद्योगिकी का हथियारकरण।
  - *फ्रेंड-शोरिंग* और *चीन+1* रणनीतियों की ओर झुकाव।
- भारत की व्यापार नीति को इसी गतिशील भू-राजनीतिक परिदृश्य में कार्य करना होगा।

भारत की विकसित होती व्यापार रणनीति की प्रमुख विशेषताएँ

- रणनीतिक स्वायत्तता को मूल सिद्धांत के रूप में अपनाना:
  - अमेरिका, यूरोपीय संघ और पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं से जुड़ाव।
  - रूस के साथ ऊर्जा और रक्षा संबंध बनाए रखना।
  - *ग्लोबल साउथ* में प्रभाव का विस्तार।
  - क्वाड, ब्रिक्स, G20, IPEF में सक्रिय भागीदारी।
    - व्यापार समझौते केवल आर्थिक व्यवस्था नहीं, बल्कि रणनीतिक संतुलन के साधन के रूप में उपयोग किए जा रहे हैं।
- रक्षात्मक से सक्रिय व्यापार नीति की ओर बदलाव:
  - **पूर्व दृष्टिकोण**: FTAs में सतर्क भागीदारी; समान विकास स्तर वाली अर्थव्यवस्थाओं पर ध्यान; विकसित बाजारों में सीमित प्रवेश।

- **नया दृष्टिकोण**: आक्रामक और रणनीतिक FTA वार्ताएँ; उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से जुड़ाव; वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVCs) में एकीकरण।
    - भारत का FTA कवरेज 2019 के 22% से बढ़कर 2026 तक लगभग 71% निर्यात बास्केट तक पहुँचने का अनुमान है।
- **रणनीतिक बदलाव:** क्षेत्रवाद से वैश्विक एकीकरण की ओर; व्यापार भागीदारों का विविधीकरण; आर्थिक खुलापन और रणनीतिक स्वायत्तता के बीच संतुलन।

- प्रमुख शक्ति गुटों के साथ जुड़ाव:
    - **यूरोपीय संघ**: व्यापक FTA से 90% वस्तुओं पर शुल्क में कमी; वस्त्र, औषधि, समुद्री उत्पादों को बढ़ावा; नियामक सामंजस्य और डिजिटल व्यापार विस्तार; ASEAN निर्यातकों के सामने भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि।
    - **संयुक्त राज्य अमेरिका**: 2026 तक अंतरिम पारस्परिक व्यापार ढाँचा; सेमीकंडक्टर, दुर्लभ खनिज, इलेक्ट्रॉनिक्स पर ध्यान; उच्च-प्रौद्योगिकी आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करना।
    - **पश्चिम एशिया (UAE)**: CEPA को सुदृढ़ करना; अफ्रीका और यूरोप के लिए प्रवेश द्वार; ऊर्जा-सुरक्षा-व्यापार संबंध।
    - **इंडो-पैसिफिक एवं QUAD ढाँचा**: आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल, समुद्री व्यापार सुरक्षा, और उभरती प्रौद्योगिकी सहयोग।
- **भू-आर्थिक साधन के रूप में व्यापार:** बहुध्रुवीय विश्व में व्यापार अब तटस्थ नहीं है।
    - भारत व्यापार समझौतों का उपयोग निर्यात गंतव्यों के विविधीकरण, चीन पर अत्यधिक निर्भरता कम करने, महत्वपूर्ण खनिज और ऊर्जा मार्ग सुरक्षित करने, कूटनीतिक प्रभाव बढ़ाने, और डिजिटल व्यापार व सततता में वैश्विक मानकों को आकार देने हेतु कर रहा है।
- वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVCs) में एकीकरण:
    - उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ, अवसंरचना विकास (*PM गति शक्ति*), लॉजिस्टिक्स सुधार और व्यापार प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण।
    - **लक्षित क्षेत्र:** इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, औषधि, रक्षा निर्माण और नवीकरणीय ऊर्जा घटक।

भारत की व्यापार नीति के रणनीतिक आयाम

- **उन्नत बाजारों तक पहुँच**: EU और अमेरिका के बाजारों में वरीयता प्राप्त; श्रम-प्रधान क्षेत्रों को बढ़ावा; MSMEs का GVCs में एकीकरण।
- **वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकरण**: मध्यवर्ती वस्तुओं पर शुल्क में कमी; उत्पादन लागत में कमी; इलेक्ट्रॉनिक्स, औषधि, IT एवं सेवाओं जैसे क्षेत्रों को सुदृढ़ता।
- **रणनीतिक विविधीकरण**: महाद्वीपों में समझौते; किसी एक भौगोलिक क्षेत्र पर निर्भरता में कमी; आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन में वृद्धि।
- **कूटनीतिक लाभ**: व्यापार को रणनीतिक प्रभाव के साधन के रूप में उपयोग; वैश्विक व्यापार मानकों को आकार देने में बड़ी भूमिका; वैश्विक आर्थिक शासन में सशक्त स्थिति।

विदेशी व्यापार नीति (FTP) 2023: विज़न 2030

- 2023 में भारत ने अपनी विदेशी व्यापार नीति (FTP) को अद्यतन किया, जिसका लक्ष्य 2030 तक वस्तुओं और सेवाओं में 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात को प्राप्त करना है।
- प्रमुख विशेषताएँ:
    - प्रोत्साहन-आधारित व्यवस्था से छूट-*आधारित* व्यवस्था की ओर बदलाव।
    - व्यापार करने में सुगमता और डिजिटलीकरण पर ध्यान।
    - जिलों को निर्यात केंद्र के रूप में प्रोत्साहन।
    - MSMEs को वैश्विक बाजारों में एकीकृत करने पर बल।
- वाणिज्य विभाग की 2025 वर्षांत समीक्षा के अनुसार, भारत का कुल निर्यात 6.05% वार्षिक वृद्धि के साथ $825.25 बिलियन तक पहुँचा, जो वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के बीच लचीलापन दर्शाता है।

आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत से संबंध

- RCEP से बाहर निकलने के बाद भारत ने एक संतुलित रणनीति अपनाई:
    - उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजनाओं और अवसंरचना विस्तार के माध्यम से घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा।
    - साथ ही FTAs के माध्यम से बाहरी एकीकरण का विस्तार।
- यह रणनीतिक स्वायत्तता, प्रतिस्पर्धी एकीकरण और निर्यात-आधारित वृद्धि को दर्शाता है।

प्रमुख चुनौतियाँ

- **वैश्विक व्यापार विखंडन**: संरक्षणवाद और आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय; भू-राजनीतिक संरेखण पर आधारित व्यापारिक गुट; WTO विवाद निपटान तंत्र का कमजोर होना।
- **भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता (अमेरिका–चीन तनाव)**: प्रतिस्पर्धी शक्ति गुटों के साथ संरेखण का दबाव; आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान का जोखिम; क्वाड, ब्रिक्स, SCO के बीच रणनीतिक संतुलन।
- **व्यापार घाटा और आयात निर्भरता**: इलेक्ट्रॉनिक घटकों, महत्वपूर्ण खनिजों, ऊर्जा संसाधनों पर भारी निर्भरता; मुद्रा उतार-चढ़ाव और बाहरी आघातों के प्रति संवेदनशीलता।
- **कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म (CBAM)**: EU का आयात पर कार्बन कर इस्पात, एल्यूमीनियम और सीमेंट को प्रभावित कर सकता है; अनुपालन लागत MSMEs को हानि पहुँचा सकती है।
- **घरेलू संरचनात्मक बाधाएँ**: लॉजिस्टिक्स की अक्षमताएँ, उच्च-प्रौद्योगिकी विनिर्माण में कौशल अंतराल, नियामक और अनुपालन भार, और MSMEs की सीमित वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता।
- **अत्यधिक निर्भरता का जोखिम**: पश्चिमी बाजारों पर अत्यधिक निर्भरता का खतरा; चीन-शैली निर्यात संकेन्द्रण से बचने की आवश्यकता।

आगे की राह

- **विनिर्माण प्रतिस्पर्धात्मकता को गहराना**: PLI योजनाओं को सुदृढ़ करना; R&D और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा; सेमीकंडक्टर और महत्वपूर्ण खनिज सुरक्षा में निवेश।

- **व्यापार भागीदारों का विविधीकरण**: अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, आसियान और ग्लोबल साउथ के साथ जुड़ाव; दक्षिण-दक्षिण सहयोग को प्रोत्साहन।
- **वैश्विक मूल्य श्रृंखला एकीकरण को सुदृढ़ करना**: *PM गति शक्ति* के माध्यम से लॉजिस्टिक्स सुधार; बंदरगाह संपर्क और डिजिटल कस्टम्स को बढ़ाना; क्लस्टर-आधारित निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहन।
- **हरित एवं सतत व्यापार संक्रमण**: नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश; हरित हाइड्रोजन निर्यात विकसित करना; घरेलू मानकों को वैश्विक सततता मानकों के अनुरूप बनाना।
- **संस्थागत सुधार**: WTO सुधार की वकालत; व्यापार वार्ता क्षमता को सुदृढ़ करना; विवाद समाधान तंत्र में सुधार।
- **MSME एकीकरण**: निर्यात ऋण विस्तार; छोटे निर्यातकों के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म; निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों के लिए कौशल विकास।
- **रणनीतिक दृष्टि**: भारत को 'बहु-संरेखण व्यापार रणनीति' अपनानी होगी, सभी प्रमुख ध्रुवों से जुड़ाव करना होगा, अत्यधिक निर्भरता से बचना होगा, व्यापार को भू-आर्थिक शक्ति के साधन के रूप में उपयोग करना होगा, और संरक्षणवाद व प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन बनाना होगा।

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: तीव्रता से विकसित हो रहे बहुध्रुवीय विश्व में भारत की वैश्विक व्यापार रणनीति सतर्क संरक्षणवाद से संतुलित वैश्विक एकीकरण की ओर परिवर्तन को दर्शाती है। इस परिवर्तन के प्रेरक तत्वों की विवेचना कीजिए और भारत के आर्थिक एवं रणनीतिक हितों पर इसके प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

Source: TH

■■■■